प्रस्तुतीकरण व्याख्यान

स्वीडिश पाठ से अनुवाद

रायल स्वीडिश अकादमी आफ सांईंसेस के प्रो. अस्सार लिंडबेक द्वारा प्रस्तुतीकरण व्याख्यान

10 दिसम्बर, 1992

यूअर मैजेस्टीस,   यूअर रॉयल हाइनेस, लेडीज़ और जेंटलमैन,

गैरी बेकर ने इसे अपना कर्तव्य बना लिया है कि विश्लेषणात्मक क्षेत्र को जिसे वे “आर्थिक उपगमन” कहते हैं, को विभिन्न सामाजिक मुद्दों से जोड़ें। अब इस बात को ध्यान में रखना जरूरी है कि बेकर जिसे “आर्थिक उपगमन” कहते हैं उसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्तियों के बारे में माना जाता है कि वे केवल आर्थिक लाभ के लिए ही कोशिश करते हैं। धन संबंधी पहलुओं के साथ गैर-आर्थिक और वास्तव में स्वार्थहीन पहलू बेकर के विश्लेषण का हिस्सा है। अत: शायद यह अधिक उपयुक्त होगा कि विश्लेषण को उचित चयन के सिद्धांत का नाम दिया जाए यानी परम्परागत आर्थिक नजरिये की बजाय अर्थपूर्ण व्यवहार।

अनुंसाधन की ऐसी संकल्पना को जब सरसरी तौर पर देखा जाए तो यह मामूली लगेगी। लेकिन ऐसा नहीं है। ऐसे क्षेत्रों में जहां बेकर ने अध्ययन किए हैं वहां मानव व्यवहार इससे पहले अकसर अवर्णित माना गया है, तार्किक गणना पर आधारित होने की बजाय सामान्य व्यवहार माना गया है। यदि बेकर की पहुंच नगण्य होती तो इतनी बड़ी मात्रा में आलोचना और विरोध न होता, जैसे इसके पहली बार आरंभ करने पर हुआ।

बेकर के विश्लेषण के मॉडल का महत्वपूर्ण अनुप्रयोग उसकी शिक्षा के अध्ययन और जॉब-पर प्रशिक्षण है यानी मानव पूंजी में निवेश जैसा कि उन्हें अब कहा जा रहा है। इस संकल्पना की सहायता से, बेकर ने समाज में मजदूरी ढांचे का एक सुस्पष्ट सिध्दांत विकसित किया और उसका अधिसमय विकास किया।

बेकर के बाद के अनुसंधानकर्ताओं ने विश्लेषण की उसी विधि को अपनाया है, जिसमें दूसरी बातों के साथ आर्थिक विकास के रूप में विविध तथ्य, व्यापार का गठन और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पूंजी निवेश उल्लेख किया जाता है।

बेकर का एक और महत्वपूर्ण योगदान समाज में परिवार या कुटुम्ब की भूमिका का विश्लेषण है। परम्परागत सिद्धांत में कुटुम्ब की आय और इस आय के माध्यम से एक ओर खपत किए जाने वाले माल की खरीद और दूसरी और मनोरंजन के बीच का विकल्प होता था। बेकर का मूल विचार कुटुम्ब को "एक छोटी फैक्टरी" के रूप में देखना था जो कुटुम्ब के सदस्यों के लिए समय लगाकर सेवाएं उत्पन्न करती है और उपभोज्य वस्तुओं खरीदती हैं, उपभोज्य वस्तुओं को कुटुम्ब में होने वाले उत्पादन प्रक्रम में मध्यवर्ती निवेशों के रूप में माना जाता है।

यह विश्लेषण इस बात का एक दिलचस्प उदाहरण है कि किसी पुराने प्रश्न को नया मोड़ दिया जाए तो यह किस प्रकार नई अन्तर्दृष्टियों की ओर ले जाता है। इस नजरिये के संदर्भ में उदाहरणार्थ वेतन में वृद्धि से कुटुम्ब के भीतर उत्पन्न होने वाली कम समय लेने वाले उत्पादन की ओर बदलाव आता है। खुले बाजार में मजदूरी में वृद्धि से परिवार का एक सदस्य रखना ज्यादा महंगा हो जाता है जो कुटुम्ब उत्पादन (यानी बच्चा देखरेख) में प्रवीण हो। इसलिए परिवार के पहले सामाजिक और आर्थिक कार्य दूसरी संस्थाओं जैसे व्यापार स्कूलों बच्चों के लिए दिन में देखभाल करने वाले केन्द्र और विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं को चले जाते हैं। इस विकास से प्रेरणा मिलती है कि घर के बाहर काम करें, एक प्रेरणा जिसके कारण माँ-बाप कम बच्चे प्राप्त करने के विकल्प को चुनते हैं और बच्चों के लिए शिक्षा में अधिक निवेश करते हैं वे प्राप्त करना चाहते हैं। बेकर इस सिध्दांत का प्रयोग औद्योगिक देशों में जननक्षमता के ऐतिहासिक ह्रास की और देशों के बीच शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जननक्षमता में अन्तर की व्याख्या करने के लिए करता है।

बेकर ने अपने सिद्धांत का प्रयोग "अपराध और सजा" के क्षेत्र में भी किया। उसका अनुमान है कि कुछ सीमित संख्या में मनोरोगियों को छोड़कर जो व्यक्ति अपराधी के रूप में व्यवहार करते हैं वे आपराधिक

गतिविधियों की लागतों और लाभों के रूप में विभिन्न प्रोत्साहनों के बारे में पूर्वानुमेय तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं। ऐसा लगता है कि इस सिद्धांत से नागरिकों के समूहों के बारे में वास्तविक पूर्वकथन प्राप्त होते हैं कि उनमें से किससे विशेष प्रकार के अपराध करने की प्रत्याशा की जाती है। इस सिद्धांत के संबंध में किए गए अनुभवसिद्ध अध्ययनों से यह भी सूचित होता है कि सिद्ध दोष किए जाने की संभावना से अपराध पर सजा की कड़ाई की तुलना में अधिक निराशाजनक प्रभाव होता है।

एक अन्य प्रयोग कार्य और हाउसिंग मार्केट में रेस तथा सेक्स के बारे में भेदभाव से संबंधित है। बेकर दिखाते हैं कि ऐसा व्यवहार विशुद्ध विश्लेषित रूप से "टैक्स फन्नी" यानी सामाजिक और निजी आर्थिक विवरणियों के बीच एक उपांतिक कर के रूप में काम करता है। इस प्रकार भेदभाव से आर्थिक हानि होती है। न केवल उस पार्टी को जिससे भेदभाव किया जाता है बल्कि उस पक्ष की भी जो भेदभाव कर रहा है।

प्रो. बेकर अब मैं आपके पास लौटता हूँ। आपने अनुसन्धान की कार्यसूची के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक विषय चुने हैं जैसा कि जनसंख्या वृद्धि, समाज में परिवार की भूमिका, शिक्षा और जॉब पर प्रशिक्षण का महत्व, अपराध और सजा और भेदभाव। आपकी रचनात्मक और बहुधा मुखर अनुसन्धान नीति के लिए शुक्रिया कि आपने “तर्कसंगत विकल्प” के मॉडलों के क्षेत्र का विस्तार किया। रॉयल स्वीडिश विज्ञान अकादमी की ओर से बहुत-बहुत बधाई देते हुए मुझे हर्ष हो रहा है, अब हिज मैजेस्टी दि किंग के करकमलों से अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में वर्ष 1992 का आर्थिक विज्ञान पुरस्कार प्राप्त करें।

नोबेल व्याख्यानों से, अर्थशास्त्र

1991-1995, सम्पादक टार्सटेन परसन,

वर्ल्ड साईंटिफ़िक पब्लिशिंग कं.

सिंगापुर- 1997